ग्रामीण समुदाय
Rural community

ग्रामीण समुदाय ऐसे समुदाय हैं जो प्रकृति पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर हैं, जिनका एक निश्चित स्थान है, जिनकी आजीविका प्रकृति से प्रथम बार उत्पन्न हुई वस्तुओं से चलती है तथा जिनका आकार छोटा होता है। इन समुदायों में घनिष्ठता निकटता, प्राथमिक सम्बन्ध, अनौपचारिकता और समानता पायी जाती है।

ग्रामीण समुदाय की परिभाषा करते हुए मैरिल और एलरिज लिखते हैं— ग्रामीण समुदाय के अन्तर्गत संस्थाओं और ऐसे व्यक्तियों का संकलन होता है जो छोटे से केन्द्र के चारों ओर संगठित होते हैं तथा सामान्य प्राकृतिक हितों में भाग लेते हैं।

सेण्डरसन → एक ग्रामीण समुदाय में स्थानीय क्षेत्र के लोगों की सामाजिक अन्तः क्रिया और उनकी संस्थाएं सम्मिलित हैं जिसमें वह खेतों के चारों ओर बिखरी झोपड़ियों तथा पुरवा या ग्रामों में रहती है और जो उनकी सामान्य क्रियाओं का केन्द्र है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ग्रामीण समुदायों में सांस्कृतिक और सामाजिक समानताएं पायी जाती हैं, वहां अनौपचारिक और प्राथमिक सम्बन्धों की प्रधानता होती है, जनसंख्या का घनत्व कम होता है, अतः उनका आकार लघु होता है और वे कृषि तथा प्रकृति पर निर्भर होते हैं।

ग्रामीण समुदाय को और अधिक स्पष्टता से समझने के लिए इसकी विशेषताओं को जानना आवश्यक है जो निम्न है:—

⇒ ग्रामीण समुदाय की विशेषता →

① **जीवन-यापन प्रकृति पर निर्भर** → ग्रामीण समुदाय के लोगों का जीवन, कृषि, पशुपालन, शिकार, मछली मारने एवं भोजन संग्रह करने आदि की क्रियाओं पर निर्भर है। इन सभी कार्यों के लिए व्यक्ति

को प्रकृति के प्रत्यक्ष और निकट सम्पर्क में आना होता है। मौसम के अनुरूप व्यक्ति अपने को ढालता है और व्यवसाय की प्रकृति को प्रभावित करने में प्राकृतिक अवस्थाओं का महत्वपूर्ण हाथ होता है। वर्षा, शीत, गर्मी, आदि कृषि को प्रभावित करते हैं और कृषि ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय है।

(b) ~~समुदाय का छोटा आकार~~ जबकि नगर का जीवन-आधार उद्योग है इसलिए नगरवासियों का प्रकृति से अप्रत्यक्ष सम्पर्क होता है। वे मशीन, कोयला, कारखाने, लोहा धातु आदि निर्जीव पदार्थों के अधिक सम्पर्क में आते हैं।

(2) समुदाय का छोटा आकार ->

प्रकृति पर प्रत्यक्ष निर्भरता समुदाय के आकार को छोटा बनाती है। इसका कारण यह है कि कृषि कार्य अथवा पशुचारण में जीवन-यापन के लिए प्रति व्यक्ति भूमि की मात्रा अधिक चाहिए अन्यथा सभी लोगों का जीवन-निर्वाह सम्भव नहीं हो पाता और उन्हे स्थान छोड़कर दूसरी जगह जाना होता है।

नगर उद्योगों पर आश्रित होते हैं, जहां हजारों आदमी एक ही व्यवसाय अथवा कारखाने में काम करते हैं। उनके लिए अधिक भूमि की आवश्यकता नहीं होती। यही कारण है कि नगरों का आकार बढ़ता जाता है।

(3) कम जनसंख्या ->

गाँव में प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या का अनुपात नगरों की तुलना में कम होता है। ग्रामीण लोगों के पास प्रति व्यक्ति भूमि अधिक होती है क्योंकि कृषि कार्य एवं पशुचारण इसके अभाव में सम्भव नहीं है।

जबकि नगरो में फैक्टरी आदि में कार्य हेतु बहुत ~~क~~ रोजगार उपलब्ध होते हैं। जिसकारण यहां प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या अनुपात अधिक होता है। इसी कारण नगरों में घनी बस्ती की समस्या जैसे स्वास्थ्यपूर्ण वातावरण का अभाव, गन्दगी, बीमारी, मकानों की कमी आदि समस्याऐं पैदा

आदि आम बात है जबकि ग्राम इससे बचे हुए हैं।

(4) प्रकृति से घनिष्ठ सम्बन्ध → ग्रामवासी प्राकृति की गोद में ही जन्म लेते और मरते हैं। ग्रामीण लोग शुद्ध हवा, पानी, रोशनी नदी गर्मी का अनुभव करते हैं। खुला एवं स्वच्छ वातावरण, पेड़-पौधे, पशु-पक्षियों आदि से ग्रामीणों का प्रत्यक्ष सम्पर्क होता है। जिसके लिए नगरवासी तरसते हैं।

नगरों में गन्दगी, प्रदुषण, कम जगह, सटे हुए मकान एवं ऊंचे मकान, फैक्ट्रीया आदि से वहां का वातावरण दूषित होता है। उन्हें रोशनी और शुद्ध हवा तक नहीं मिलती।

(5) समरूपता (सजातीयता) → ग्रामीण समुदाय के लोगों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक जीवन में एकरूपता देखने को मिलती है। उनके व्यवसाय, भाषा, धर्म, रीति-रिवाज, आदर्श, मान्यताएं, आचार-विचार एवं जीवन के प्रति दृष्टिकोण सामान्यतः समान होते हैं। उनके जीवन में नगरीय लोगों की तरह अनेक विभेद और विषमताएं नहीं पायी जाती।

जबकि नगरीय जीवन में विभिन्नताएं देखने को मिलती है। उनकी व्यवसाय, भाषा, धर्म, रीति-रिवाज आदि अलग-अलग होते हैं। क्योंकि वहां कई प्रांतो के लोग एक साथ एक ही जगह पर रहते हैं।

(6) प्राथमिक सम्बन्धों की प्रधानता → गाँव का आकार छोटा होने से प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानता है। ग्रामवासियों में निकट, प्रत्यक्ष और घनिष्ट सम्बन्ध होते हैं। ऐसे सम्बन्धों का आधार परिवार, पड़ोस और नातेदारी है। ग्राम में औपचारिक सम्बन्धों का अभाव होता है। वे कृत्रिमता से दूर होते हैं तथा उनमें पारस्परिक सहयोग एवं प्राथमिक नियन्त्रण पाया जाता है।

जबकि नगरो में द्वैतिक सम्बन्धों

की प्राथमिकता होती है तथा सम्बन्ध औपचारिक होते हैं इनमें कृत्रिमता एवं दिखावा अधिक होता है। सम्बन्ध प्रत्यक्ष होते हैं तथा दूर के सम्बन्धों की प्रधानता होती है।

(7) सरल एवं सादा जीवन → ग्रामीण लोगों का जीवन सरल और सादा होता है। वे नगर की तड़क-भड़क, चमक-दमक, आडम्बर और बनावटी जीवन से दूर होते हैं। उनके पास न तो साज सामान और शृंगार की सामग्री ही होती है और न ही वे कृत्रिमता को पसन्द करते हैं। उन लोगों की आय भी इतनी नहीं होती कि वे जरूरत की चीजों के अतिरिक्त फैशन और साज-सज्जा पर खर्च कर सकें। साधारण और पौष्टिक भोजन, शुद्ध हवा और मोटा वस्त्र तथा विनम्र और प्रेमपूर्ण व्यवहार ग्रामीण लोगों को पसन्द है। प्रकृति पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भरता उन्हें सरल, छल-रहित और सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने को प्रेरित करती है।

(8) सामाजिक गतिशीलता का अभाव →
ग्रामीण समाज अपेक्षाकृत स्थिर समाज होते हैं। उनमें सापेक्ष रूप से गतिशीलता का अभाव होता है, वे बड़े में भरे हुए जल की तरह स्थिर और शान्त होते हैं। परिवर्तन के प्रति सामान्यतः उदासीन होते हैं ~~तथा~~ ~~जीवन~~ ग्रामीण सामाजिक संस्तरण इतना कठोर और अनमनीय होता है कि उसे बदलना बड़ा कठिन है। यहां जाति व्यवस्था ही सामाजिक संस्तरण का मुख्य आधार है। जातिगत व्यवसायों के कारण ये परम्परागत व्यवसाय में लगे रहते हैं परन्तु आज विभिन्न कारकों के प्रभाव से विभिन्न क्षेत्रों में कुछ गतिशीलता एवं परिवर्तन दिखाई पड़ने लगे हैं।

इनके विपरीत नगरीय जीवन एक गतिशील जीवन में यहां नित्य नये परिवर्तन होते रहते हैं और ये परिवर्तन को सहज स्वीकार करते हैं। यहां जाति के बदले वर्ग व्यवस्था का अधिक प्रचलन है, जहां व्यक्ति

अपनी कुशलता से अपने संस्तरण में परिवर्तन ला सकता है। अतः यहां प्रतियोगिता अधिक देखी जाती है। सभी का विभिन्न व्यवसाय होने के कारण आगे बढ़ने की होड़ लगी रहती है। इनका समाज व्यापार और व्यापारिक जीवन का होता है।

(9) **धर्म, प्रथा और रूढ़ियों का महत्व ->**

ग्रामों में सामाजिक नियन्त्रण के साधन अनौपचारिक होते हैं। धर्म, प्रथाएं और रूढ़ियां उनके जीवन को नियन्त्रित करती हैं। धर्म ग्रामवासियों के जीवन का केन्द्र है। उनके दैनिक और वार्षिक जीवन की अनेक क्रियाएं धर्म से ही प्रारम्भ होती हैं और धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाओं के साथ ही समाप्त हो जाती हैं। वे ईश्वरीय शक्ति को आदर, भय और श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं और उनके सम्मुख नत-मस्तक होते हैं।

जबकि नगरों में धर्म, प्रथा रूढ़ियों का कम महत्व पाया जाता है। शिक्षा के कारण लोग नगरों में कर्म-काण्ड, पाठ-पूजा, यज्ञ-हवन और अनुष्ठानों में अधिक रुचि नहीं रखते। वे इन सबके बजाय स्वयं की शक्ति में विश्वास करते हैं।

(10) **सामुदायिक भावना ->**

ग्राम नगर की अपेक्षा छोटा होता है अतः वहां के लोगों में अपने गांव के प्रति लगाव और सभी में हम की भावना पायी जाती है। नगरीय लोगों में व्यक्तिगत स्वार्थ की प्रधानता होती है तो ग्रामीण लोग सारे गाँव की भलाई की बात अधिक सोचते हैं।

नगरों में सामूहिक एवं सामुदायिक जीवन की अपेक्षा व्यक्तिवादिता अधिक पाई जाती है। प्रत्येक व्यक्ति समूह एवं समुदाय की अपेक्षा स्वयं की अधिक चिन्ता करता है।

NOTE -> ग्रामीण समुदाय की विशेषता एवं इन विशेषताओं के आधार पर ही ग्राम और नगर में भेद किया जाता है जो कि ऊपर बताया गया है। अलग से नगरीय विशेषताओं को भी पढ़ सकते हैं।